Vol 5 Issue 2 Aug 2015 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063

Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume - 5 | Issue - 2 | Aug - 2015

21 वीं सदी की स्त्री के सच का दूसरा पहलू

अशोक बैरागी
पी–एच. डी. रिसर्च फेलो (हिन्दी), नेट–जेआरएफ,
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत.

प्रस्तावना :–

आज के युग की नारी का एक बड़ा तबका स्त्रीवाद के उस अनर्थ का परिणाम है जहाँ नारी की सम्पूर्णता का अर्थ इस समाज में उसके अस्तित्व को परिभाषित नहीं करता बल्कि एक नये अर्थ में हमारे सामने प्रकट होता है, जिसमें उसकी फेमिनिटी (नारीत्व), फर्टीलिटी (उर्वरता) और फिजिकलिटी (दैहिकता) है। आज स्त्री के सामने सबसे बड़ी विडंबना यह है कि वह स्त्री होने से ही पलायन करना चाहती है। नब्बे के दशक में हुए नारी विमर्श ने दो घटकों के बीच नई दीवार खड़ी करने के अलावा कुछ नहीं किया है। महिला को कितना ही कुछ दे दिया जाए वह संतुष्ट नहीं होती। असंतोष ही सफलता की निशानी है परन्तु अति 'सर्वत्र वर्जयेत्' ज्यादा सुख भी घातक सिद्ध होता है। वर्तमान में यही तो हो रहा है। सबकुछ मिलने के बाद भी स्त्री कुंठाओं में घिरी रहती है। अति सुख से परेशान एवं द्वंद्वग्रस्त महिला की कहानी है 'एक स्त्री के कारनामें'। मृदुभाषी एवं सुलझे हुए व्यक्तित्व का पति अर्थात् देवता को पाकर भी पत्नी तनावग्रस्त है। पति–पत्नी के बीच खट्टी मिठी नोंक–झोंक के अभाव से परेशान पत्नी, पति के हर बात पर 'इट्स ऑल राइट' का जुमला कहने से द्वंद्वग्रस्त है। *''..... चाय की पत्ती और कुटी अदरक के संग पूरे चम्मच भर काली मिर्च की बुकनी खौलते पानी में डाल देती है।''* फिर भी पति का न शोर, न कोहराम सिर्फ 'इट्स ऑल राइट'। अब आप ही सोचें कि क्या वाकई ''नारी सब पर भारी'' है या बहुत भारी है।

क्या अब पुरूष विमर्श की आवश्यकता है? मुझे तो ऐसा ही लगता है। स्त्री एक दृष्टिकोण से तो प्रोगेतिहासिक नारी की तरह अक्रामक और हिंसक है तो दूसरे दृष्टिकोण से ज्ञानवान, कोमल और भोली और आज की नारी तो लक्जरियस है। उसके पास अथाह धन है। नहीं है तो चाहिये किसी भी कीमत पर। उसके अनेक रूप है अबला–सबला, शोषित–शोषक, पीड़ित–पीड़क, कहीं देह का इस्तेमाल करती है तो कहीं दिमाग का, कहीं दिल का तो कहीं बुद्धी का और यह सब न बन पड़ा तो भावुक होकर ऑसूओं का इस्तेमाल और अक्रामक होकर अपशब्दों का प्रयोग।

वास्तव में नारी क्या है? कभी परंपरा तो कभी आधुनिकता उसे स्वयं नहीं पता कि वह क्या थी, क्या है, और क्या हो रही है। उसने खुद ने अपने ऐश्वर्य और कष्ट के इतने सारे रेत के महल गढ़ रखे हैं कि उनमें वह स्वयं कहीं खोकर रह गई है। सब कुछ नकली जान पड़ता है। नकली बाल, नकली छवी, नकली अदाएँ, नकली चेहरा और नकली प्रेम यह है आज की स्त्री जो कहती है कि वह दुखी है। उसे विमर्श की आवश्यकता है। महिलाओं को भारत में ढेरों विशेषाधिकार है, मसलन–

१.हिन्दू विवाह अधिनियम १९५५, विशेष अधिनियम १९५४, विवाह में विधि संशोधन अधिनियम १९७६ द्वारा संशोधन करके किसी लड़की को जिसका बाल्यकाल में विवाह हो गया हो, यह अधिकार दिया गया है कि वह उसके वयस्क होने से पहले हुये विवाह को निरस्त कर सकती है। पारस्परिक सहमति के आधार पर विवाह–विच्छेद का सिद्धान्त स्वीकार कर लिया गया है तथा क्रूरता और परित्याग को विवाह–विच्छेद के आधारों में सम्मिलित कर लिया गया है।
२.प्रसूति सुविधा अधिनियम १९६१
३.समान वेतन अधिनियम १९७६, में महिलाओं और पुरूषों को एक जैसे काम के लिए समान भुगतान की व्यवस्था की गई है।
४.बाल विवाह अवरोधक संशोधन अधिनियम १९७३, विवाह की आयु लड़कियों के लिये १५ से बढ़ाकर १८ तथा लड़कों के लिये १८ से बढ़ाकर २१ वर्ष कर दी गई है।
५.अनैतिकता निवारक अधिनियम १९८६, के माध्यम से वेश्यावृति सम्बन्धी कानून को कड़ा और प्रभावी बनाया गया है ताकि स्त्री या पुरूष ऐसे सभी व्यक्तियों को शामिल किया जा सके जो अनैतिक कार्यों के लिये महिलाओं तथा लड़कियों को शोषण करते हैं।
६.१९६१ में महिलाओं के अभद्र प्रदर्शन निवारक अधिनियम के माध्यम से यह प्रावधान किया गया है कि विज्ञापनों और पुस्तकों

आदि के द्वारा महिलाओं का अश्लील प्रदर्शन न किया जाये।
७.सती निवारक अधिनियम १९७८, जिसके अन्तर्गत सती प्रथा को गौरवान्वित करने वालों के लिये भी १ से ७ वर्ष की सजा का प्रावधान किया गया है।
८.महिलाओं की अवस्थिति, निवर्तमान विधियों और नितियों की कुशलता और परिणामों का अध्ययन करने व उनकी बेहतरी के लिये सुझाव देने हेतु एक राष्ट्रीय महिला आयोग की सीापना १९९२ में की गयी।
९.महिलाओं को घरेलू हिंसा से बचाने के लिये घरेलू हिंसा निवारक अधिनियम २००७ का निर्माण किया गया है।
१०.सम्पत्ति अधिकार अधिनियम २००७
११.फौजदारी कानूनों, जैसे- गवाही कानून, भारतीय दण्ड संहिता और आपराधिक प्रक्रिया संहिता में संशोधन किये गये जिनके अन्तर्गत महिलाओं के साथ छेड़खानी, बलात्कार, क्रूर व्यवहार को दण्डनीय अपराध बनाकर दण्ड के प्रावधानों को और कड़ा किया गया। भारतीय दण्ड संहिता में
१२.दहेज मृत्यु को एक नये अपराध के रूप में शामिल किया गया है।

इतना कुछ होने के बाद भी स्त्री विमर्श करने वाली लेखिकाएँ कहती है कि स्त्री का शोषण हो रहा है। यह शोषण कौन कर रहा है सीधा सा जवाब हर तरफ से पुरूष, परन्तु इसके लिए स्त्री कितनी जिम्मेदार है। इस पर उनके कान पर जूँ तक नहीं रेंगती। क्या कभी किसी ने सोचा है, एक पुरूष कितना दुखी है उसे तो बस अय्याशी, व्यभिचारी, झूठा, फरेबी और मक्कारी, शोषक और कुंठित जैसे नाम महिला लेखिकाओं ने दिए हैं। वह कितना उदास है कितना दुखी है इस संसार के मकड़जाल में कभी सोचा है किसी ने। उसे परिवार, पत्नी और बच्चों की कितनी चिंता है। *''..... उसकी दृष्टि मुन्ना के मटमैले कैनवास के जूतों की तरफ जाती है. .....इस बार तो पहले मुन्ना के जूते आएँगे। तभी वह पत्नी की चप्पलों की ओर देखता है.....चुपचाप यही सोचता रहता है कि इस महीने पत्नी की चप्पल खरीदनना ज्यादा जरूरी है या मुन्ने का जूता।''*[२] आज समकालीन स्त्री लेखन की दशा और दिशा बेहद चिंतनीय स्थिति में है। आजकल की समस्त स्त्रीवादी लेखिकाएँ फिजिकलिटी (दैहिकता) में ही स्त्री की समस्त परेशानियों का हल ढूँढ रही है। दैहिकता के नाम पर वे कुछ भी लिख सकती हैं। कुछ भी बोल सकती हैं और इसका विरोध करने वाला कोई नहीं है।

आज की नारी आजाद होना चाहती है इतनी आजाद की वह सबसे दूर हो घर, परिवार, रिश्तेदार और समाज केवल अपने में ही खोई रहने वाली। आज उसके पास डिग्रीयों की कमी नहीं है, लेकिन निश्चित तौर पर ज्ञान और बुद्धि का अभाव है। बिखरते परिवार अब संयुक्त परिवारों से एकल परिवार बन रहे हैं और यह सफलता की अंधी दौड़ की कड़वी सच्चाई है। मूल रूप से इससे नुकसान ही होगा कोई फायदा नहीं।*''यही तो गलती कर रहे है आप लोग। हिन्दुस्तान में जो अच्छी बातें हैं उन्हें मिटने दे रहे है। पता है आपको, अमेरिकी समाजशास्त्री कहते है। बच्चों की परवरिश के लिए संयुक्त परिवार उत्तम है।''*[३] आज की लेखिकाएँ स्त्री का एक ऐसा चरित्र रच रही हैं, जिसमें में खुद भी नहीं समाना चाहती। स्त्री की बिंदास छवी, काम को लेकर खुलापन और हर और अपनी दबंगता दिखाने से ही फायदा होगा ऐसा भ्रम पैदा कर रही हैं। आजादी और समानता के नाम पर दैहिकता का विस्फोट कर सभ्यता और मानव मूल्यों के चीथड़े उड़ा रही हैं। वे स्वयं इन सभी क्रियाकलापों से बहुत दूर हैं। इस प्रकार की बेड़ियाँ वह स्वयं अपने पैरों में कदापि नहीं डालती। केवल भ्रमित ज्ञान ही उनका मूल मंत्र है। अधिकारों को ग्रहण करने वाली स्त्री स्वयं को इस हालात में पहुँचाने के लिए समाज, परिस्थितियों, और पितृसत्ता को कोसती है, जबकि वह जानती है कि पुरूष भी उतनी निर्दयता के साथ स्त्री 'सत्ता' द्वारा शोषित किए जाते रहे हैं। कितने ही प्रमाण अतीत से लेकर आज तक हमारे से सामने हैं।

एक तरफ तो वे सबकुछ खुल्लम-खुल्ला करने की पैरवी करती हैं दूसरी तरफ स्वयं उससे कोसों दूर संस्कारों से सजी संवरी किताबों, अखबारों, न्यूज चेनल्स और फेसबुक, एवं व्हाट्स एप के माध्यम से स्वयं को महान् सिद्ध करने में लगी हुईं हैं। क्या यह एक प्रकार का पैराडॉक्स (विरोधाभास) नहीं है।

हमारे साहित्यकारों ने भी स्त्री के दूसरे पहलू पर अपनी लेखनी चलाई है। आधुनिक युग के महान् विचारक एवं लेखक नागार्जुन के उपन्यासों में नारी विधवा, सधवा, साधुनी, कामुक आदि कई रूपों में नजर आती है। इमरतिया की गोरी और कुम्भीपाक की उन्की और उन्की की माँ कामग्रस्त नारी है। रेणु ने भी कामग्रस्त नारियों का वर्णन विस्तार से किया है। नागार्जुन इस समस्या का कम ही स्पर्श कर पाए। साधु मठों में स्त्री दासी के रूप में होती थी। इमरतिया ऐसी ही साधुनी है जो अविवाहिता, युवती है और एक साधु से प्रेम करती है, पर साधु उसे बहन समझता है। इमरतिया फिर भी उससे प्रेम करती रहती है। कहीं भी उसकी वासना शांत नहीं होती है और इमरतिया का कुंठित काम सपने में प्रकट होता है, जैसे मैं सो जाती हूँ, सपने में ही महसूस करती हूँ, किसी मर्द का बदन मेरे बदन को कसकर दबा रहा है। नींद में कपड़े खराब हो जाते हैं। कुम्भीपाक में उन्की जब सोलह वर्ष की अवस्था में ही अपने मास्टर से गर्भवती हो जाती है, तो गर्भ गिराने के तिकड़म से हटकर उसकी शादी एक पैंतालीस वर्ष के अधेड़ से कर दी जाती है। उसकी माँ भी इतनी कामुक नारी है कि महित के साथ सास-दामाद का रिश्ता तोड़कर पति के देह धर्म का रिश्ता (सेक्स) कायम कर लेती है। इसके उलट स्त्री विमर्श में कुछ और ही लिखा जा रहा है। *''कुछ दशक पहले आक्सफोर्ड डिक्शनरी में एक शब्द शामिल किया गया था- 'बिंबो' जिसका अर्थ था- एक आकर्षक किंतु अबौद्धिक और अगंभीर युवा स्त्री..... (एक अट्रेक्टिव बट अनइंटेलिजेंट एंड फ्विवलस यंग वुमन)''*[४] स्त्री विमर्श ने इसी 'बिंबो' को गढ़ा है। इन लेखिकाओं ने खुद के लिए और स्त्री जाति को भ्रमित करने के लिए एक ऐसा भ्रमजाल रचा है, जिससे ये कभी बाहर नहीं निकल पाएँगी। आज नारी 'वस्तु' से स्त्री बनकर पुनः स्त्री से 'वस्तु' बन रही है। वह मशीन बन चुकी है। उसमें कोई भाव शेष नहीं है। यह स्वीकार योग्य बात है कि आज भी महिलाओं का शोषण हो रहा है, परन्तु कहाँ महिलाएँ शोषक हैं और कहाँ शोषित यह जानना कठिन है। जो बौद्धिकता के स्तर पर ऊपर है वे

तो शोषक हैं और जो अनजान, अनभिज्ञ, अशिक्षीत, एवं कमजोर वर्ग की महिलाएँ हैं वे शोषित। इतना होने के बाद भी स्त्री विमर्श नारी के लिए बुना गया एक रेशमी जाल ही साबित हो रहा है। इसमें कोई दो मत नहीं है। स्त्री के हित में बने सारे कानून सारी योजनाएँ निरर्थक ही साबित हो रही हैं।

स्त्री विमर्श जो स्त्री मन का 'जादुई पिटारा' कहा जाता है उसमें अश्लीलता, सेक्स और स्त्री की कुचेश्टाएँ ही भरी पड़ी है। क्या ऐसी रचनाकार चाहेंगी कि वे स्वयं इस दौर से गुजरे या पाठक, परिवार और समाज जो साहित्य से ही निर्मित होता है, उन्हें इस प्रकार का जहर पिलाएँ। महिलाएँ चाहती हैं कि उन्हें भरी बस में कोई सीट दें। वे लाइन लगाए बिना टिकट प्राप्त करना चाहती हैं, लेकिन कितनी ऐसी महिलाएँ हैं जो वृद्ध और विकलांग को देखकर अपनी सीट छोड़ देती है। किसी की ट्रेन न निकल जाए इसलिए अपनी लाइन से टिकट लेने देती है। हर बार स्पेशल ट्रीटमेंट चाहिये क्योंकि हम स्त्री हैं, कोमल हैं, सुंदर हैं हमारे पास ऑसू हैं और अब तो कानून भी हमारी मुट्ठी में है। वाह! क्या पैराडॉक्स है।

स्त्री ने पितृसत्ता को भी अपना एक महत्वपूर्ण हथियार बनाया है। किंतु वे अनभिज्ञ हैं कि पितृसत्ता का वर्चस्व जैविक आधार पर नहीं हुआ था, बल्कि यह व्यवस्था सांस्कृतिक और सामाजिक आधार पर रची गई थी। जहॉ सारे अधिकार और स्वतंत्रताएँ पुरूष के अधिन और सारी गुलामियॉ और कर्त्तव्य स्त्री के हिस्से में रखी गई थी, ऐसा महिलाएँ मानती है। यह सच्चाई का एक पहलू है, पूरी सच्चाई नहीं। इतिहास गवाह है कि स्त्री ने कई ताज और तख्त को पलट कर रख दिया, युद्धों में हजारों की जान लेने की भागी बनी। फिर कैसे वह पुरूष की दासी बन गई? क्या पितृसत्ता से उन्हें कोई फायदा नहीं होता घर पर रहना, काम नहीं करना, वित्तीय सुरक्षा, लग्जरियस लाईफ, नौकरों की फौज, किटी पार्टी, मंहगे पॉर्लर, शॉपिंग मॉल की सैर, दिनभर सीरियल्स देखकर पलंग तोड़ना, मॅहंगे ब्यूटी प्रॉडक्ट, नौकरों को आदेश देते हुए फेसबुक और व्हाट्स एप पर प्रेम की कविताएँ पोस्ट करना और छीछोरेपन को मात देना।

आज स्त्री की दशा और दिशा दोनों ही बदल गई है। इस कुचक्र से वह कब बाहर निकलेगी पता नहीं। सफलता प्राप्त करने के लिए वह किसी भी प्रकार का शॉटकर्ट्स अपनाने के लिए तैयार है। इन सारी परिस्थितियों को उत्तपन्न कर वह खुद को ही चोट पहुँचा रही है। फलस्वरूप यौन कुंठा, अकेलापन, तिरस्कार, फूहड़ता, मनोरोग, एवं अशांति आदि जैसी तमाम परेशानियों के दलदल में फंसती जा रही है।

सन्दर्भ ग्रंथ

१.गौरा गुनवंती – सूर्यबाला, पृष्ठ ८६ .
२.एक इन्द्रधनुष जुबैदा के नाम – सूर्यबाला, पृष्ठ ३८ .
३.उत्कृष्ट साहित्य के जनसुलभ संस्करण – मृदुला गर्ग, पृष्ठ १०६ .
४.सत्य के दूसरे छोर पर स्त्री – अनुपमा ऋतु, अहा! जिंदगी, जुलाई २०१५, पृष्ठ १८ .

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org